موضوع الخطبة : **معنى الإيمان بالقدر**

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :طارق بدر السنابلي(@Ghiras_4T)

शीर्षक:

भाग्य में विश्वास रखने का अर्थ

الحمد لله العلي الأعلى، الذي خلق فسوى، والذي قدّر فهدى، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَـه إِلَّا اللَّهُ وحده لا شريك له، له الحمد في الآخرة والأولى، وأشهد أن محمدًا عبدُ الله ورسوله، بلّغ الرسالة، وأدى الأمانة، ونصح الأمة، وكشف الغمة، صلى الله عليه وعلى آله وأصحابه ومن سار على نهجهم واقتفى، وسلّم تسليمًا كثيرًا.

प्रशंसाओं के पश्चात!

ऐ मुसलमानो! अल्लाह से डरो एवं उसका सम्मान करो, उसके आज्ञाकार बनो एवं आवज्ञा से वंचित रहो, आज्ञाकारी के कर्मों को करने में एवं अवज्ञा से वंचित रहने में धीरज को अपनाओ, ज्ञात रखो के भाग्य में विश्वास रखना विश्वास (ईमान) का एक ऐसा स्तंभ है जिसका पालन किए बिना ईमान सहीह नहीं हो सकता, भाग्य का अर्थ यह है कि

अल्लाह ने अपने पूर्व ज्ञानों एवं बुद्धिमत्ता के आवश्यकताओं के अनुसार ब्रह्मांड के भाग्य को निर्धारित किया है।

१. ऐ अल्लाह के दासो! भाग्य पर विश्वास रखने में चार बातें में सम्मिलित हैं: ज्ञान, लेख (किताबत), इच्छा (मशीयत) एवं निर्माण (तख़लीक़) पर विश्वास रखना, ज्ञान पर विश्वास रखने का अर्थ यह है कि इस बात पर विश्वास रखा जाए कि अल्लाह तआ़ला प्रारंभिक काल से अंत काल तक के प्रत्येक वस्तु के संबंध में सारांश एवं विस्तार स्वरूप भली-भांति अवगत है, चाहे उसका संबंध क्रियाओं से हो जैसे: जीवन एवं मृत्यु देना, वर्षा करना अथवा उसका संबंध दासों की कर्मों से हो, जैसे: उनकी वार्ता एवं उनके कार्य, इन संपूर्ण कार्यों से अल्लाह भली-भांति अवगत है, इसका साक्ष्य अल्लाह का कथन है:

﴿وكان الله بكل شيء عليما﴾

अर्थात: अल्लाह प्रत्येक वस्तु का (भली-भांति) ज्ञान रखने वाला है।

इसके अतिरिक्त अल्लाह का कथन है:

﴿وعنده مفاتح الغيب لا **يعلمها** إلا هو **ويعلم** ما في البر والبحر وما تسقط من ورقة إلا **يعلمها** ولا حبة في ظلمات الأرض ولا رطب ولا يابس إلا **في كتاب مبين**﴾

अर्थात: अल्लाह के पास ही अदृश्य की कुंजियां हैं, (धनागार) अल्लाह के अतिरिक्त उनसे कोई अवगत नहीं, एवं वह संपूर्ण वस्तुओं का ज्ञानी

है, जो कुछ धरती पर है एवं दरियाओं में है, जो भी पत्ता गिरता है वह उसे जानता है, एवं जो भी बीज धरती के अंधेरे भागों में है एवं जो भी सुखा एवं गीला वस्तु गिरता है यह संपूर्ण चीज़ें खुली हुई पुस्तक (किताब-ए-मुबीन) में हैं।

२. ऐ विश्वासियो! भाग्य में विश्वास रखने का दूसरा स्तंभ पुस्तक पर ईमान लाना है, अर्थात: इस बात में विश्वास रखना कि प्रलय तक जो कुछ भी प्रकट होगा; अल्लाह ने लोह-ए-महफ़ूज़ में उन संपूर्ण चीज़ों को लिख दिया है, यह अल्लाह ने आकाश एवं पृथ्वी के निर्माण से पचास हज़ार वर्ष पूर्व लिख दिया, भाग्य के लिखने का साक्ष्य अल्लाह का यह कथन है:

﴿قل لن يصيبنا إلا ما **كتب** الله لنا﴾

अर्थात: आप कह दीजिए कि हमें अल्लाह के अतिरिक्त हमारे हित में लिखे हुए कि कोई भी चीज़ नहीं पहुंच सकती।

एवं यह कथन भी इसका साक्ष्य है:

﴿ما أصاب من مصيبة في الأرض ولا في أنفسكم إلا في **كتاب** من قبل أن نبرأها﴾

अर्थात: ना कोई कठिनाई संसार में प्रकट होती है ना (विशेषकर) तुम्हारे प्राणों में, मगर इससे पूर्व कि हम उस का आविष्कार करें, वह एक विशेष पुस्तक में लिखित है।

अर्थात: इससे पूर्व कि हम सृष्टि का निर्माण करते।

अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल्-आ़स रज़ि अल्लाहु अन्हू से मरवी है कि मैंने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कहते हुए सुना: "अल्लाह तआ़ला ने ही आकाश एवं पृथ्वी के निर्माण से पचास हज़ार वर्ष पूर्व सृष्टि के भाग्य को लिख दिया"।

(मुस्लिम: २६५३)

एवं उ़बादह बिन सामित रज़ि अल्लाहु अन्हू रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि आप ने फ़रमाया: "सर्वप्रथम वस्तु जिसका अल्लाह ने अविष्कार किया वह क़लम थी, फिर उसे आदेश दिया कि लिखो, उसने कहा: ए मेरे पालनहार! मैं क्या लिखूं? तो अल्लाह ने उत्तर दिया: प्रलय के दिन के आगमन तक प्रत्येक वस्तु के भाग्य लिख, फिर उ़बादह ने अपने पुत्र से कहा: ए मेरे प्रिय पुत्र! नि: संदेह मैंने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कहते हुए सुना है, आप कहा करते थे: "जिस व्यक्ति की इसके अतिरिक्त (किसी अन्य आस्था) पर मृत्यु हुई, वह मुझ में से नहीं"।

(इसे अबू दाऊद: ४७००, एवं तिर्मीज़ी: ३३१९ ने रिवायत किया है, उल्लेख किए गए शब्द अबू दाऊद के हैं एवं अल्लामा अल्-बानी ने इसे सहीह कहा है।)

३. ऐ मुसलमानो! भाग्य में विश्वास रखने का तीसरा स्तंभ अल्लाह की इच्छा (मशीय्यत) पर ईमान लाना है, इसका अर्थ यह है कि इस बात में विश्वास रखना की ब्रह्मांड में जो कुछ प्रकट हो रहा है वह अल्लाह की इच्छा से हो रहा है, अर्थात: ब्रह्मांडीय अनुमति से, चाहे उसका संबंध अल्लाह की क्रियाओं से हो जैसे: जीवन एवं मृत्यु प्रदान करना एवं ब्राह्मांड के कार्यों का समाधान करना अथवा उसका संबंध सृष्टि की क्रिया से हो जेसे: आना और जाना, कुछ करना एवं कुछ त्याग देना, आज्ञा एवं अवज्ञा एवं इनके अतिरिक्त वो संपूर्ण कार्य जिनकी गणना करना संभव नहीं, अल्लाह का अपने क्रियाओं के संबंध में कथन है:

﴿وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا **يَشَاءُ** وَيَخْتَارُ﴾

अर्थात: और आपका पालनहार जो चाहता करता है प्रकट करता है एवं जिसे चाहता है चयन कर लेता है।

इसके अतिरिक्त अल्लाह का कथन है:

﴿وَيَفْعَلُ اللَّهُ مَا **يَشَاءُ**﴾.

अर्थात: और अल्लाह जो चाहे कर डाले।

एवं अल्लाह ने सृष्टि की क्रियाओं के संबंध में फ़रमाया:

﴿وَلَوْ **شَاءَ** اللَّهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقَاتَلُوكُمْ﴾

अर्थात: यदि अल्लाह चाहता तो उन्हें तुम्हारे विरुद्ध प्रभुत्व प्रदान कर देता एवं वह तुम से नि: संदेह युद्ध करते।

इस कारणवश युद्ध लड़ना जो कि दासों के कार्यों में से है वह भी अल्लाह की इच्छा के बिना प्रकट नहीं हो सकता, अल्लाह का कथन है:

﴿وَلَوْ شَاء رَبُّكَ مَا فَعَلُوهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ﴾

अर्थात: यदि अल्लाह चाहता तो ये ऐसे कार्य ना कर सकते, इस कारणवश आप उन्हें एवं जो कुछ ये मानहानि कर रहे हैं उन्हें रहने दीजिए।

इसके अतिरिक्त अल्लाह का कथन है:

﴿ولو شاء الله ما أشركوا﴾

अर्थात: यदि अल्लाह को स्वीकृत होता तो यह बहुदेववाद नहीं बनते।

ज्ञात हुआ के इस ब्रह्मांड में कोई भी कार्य अल्लाह की इच्छा के बिना प्रकट नहीं होता, चाहे उसका संबंध अल्लाह के कार्यों से हो अथवा दासों के कार्यों से, क्योंकि यह ब्रह्मांड अल्लाह की शासन है, इस कारणवश इस शासन में वही होगा जो वह चाहेगा एवं जिसकी वह अनुमति देगा, यदि कोई कार्य उसकी अनुमति के बिना प्रकट होता तो उसका शासन अधूरा रहता,अल्लाह इससे सर्वोच्च एवं सर्वश्रेष्ठ है।

४. ऐ मुसलमानो! भाग्य में विश्वास रखने का चौथा स्तंभ यह है कि निर्माण पर ईमान लाया जाए, अर्थात: इस बात में विश्वास रखा जाए

पूरे ब्रह्मांड को उसके संपूर्णत: जातियों, विशेषताओं एवं क्रियाओं के साथ अनुपस्थित से उपस्थित किया, अल्लाह का कथन है:

﴿اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ﴾

अर्थात: अल्लाह ही प्रत्येक चीज़ों का बनाने वाला है।

अल्लाह का कथन है:

﴿وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ فَقَدَّرَهُ تَقْدِيرًا﴾

अर्थात: उसने प्रत्येक चीज़ों को पैदा करके एक उपयुक्त अनुमान/भाग्य स्थित किया है।

अल्लाह का कथन है:

﴿إنا كل شيء خلقناه بقدر﴾ .

अल्लाह के दासो! ये चार बातें हैं जो भाग्य में विश्वास रखने के स्तंभ है, जिसने इन्हें समझ कर इनका अनुसरण किया उसने भाग्य पर विश्वास रखा।

अल्लाह तआ़ला हमें एवं आपको सर्वश्रेष्ठ क़ुरआन के लाभों से लाभार्थी करे, मुझे एवं आपको क़ुरआन के श्लोकों एवं बुद्धिमत्ता पर आधारित सलाहों से लाभार्थी करे, मैं अपनी यह बात कहते हुए अपने लिए एवं आप संपूर्ण के लिए अल्लाह से क्षमा मांगता हूं, आप भी उस से क्षमा

प्रार्थी हों। निः संदेह वह अधिक क्षमा स्वीकार करने वाला एवं अधिकतम दया करने वाला है।

अल्लाह के दासो! ये चार बातें हैं जो भाग्य में विश्वास रखने के स्तंभ है, जिसने इन्हें समझ कर इनका अनुसरण किया उसने भाग्य पर विश्वास रखा।

अल्लाह तआ़ला हमें एवं आपको सर्वश्रेष्ठ क़ुरआन के लाभों से लाभार्थी करे, मुझे एवं आपको क़ुरआन के श्लोकों एवं बुद्धिमत्ता पर आधारित सलाहों से लाभार्थी करे, मैं अपनी यह बात कहते हुए अपने लिए एवं आप संपूर्ण के लिए अल्लाह से क्षमा मांगता हूं, आप भी उस से क्षमा प्रार्थी हों। निः संदेह वह अधिक क्षमा स्वीकार करने वाला एवं अधिकतम दया करने वाला है।

द्वितीय उपदेश:

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده، أما بعد!

प्रशंसा ओं के पश्चात!

ऐ अल्लाह के दासो! आप अल्लाह का भय अपनाएं एवं ज्ञात रखें कि अल्लाह के भाग्य के तीन भाग हैं:

१. पहला भाग्य: जो अल्लाह तआ़ला ने आकाश एवं पृथ्वी के निर्माण से पचास हज़ार वर्ष पूर्व स्थित फ़रमाया, जब अल्लाह ने क़लम को पैदा किया तो उसे आदेश दिया: प्रलय के प्रकट होने तक प्रत्येक वस्तु का भाग्य लिख।

(इस हदीस के प्रमाण का उल्लेख हो चुका है।)

२. आयु का भाग्य: यह उस समय लिखा जाता है जब मां के कोख में शुक्राणु का निर्माण होता है, उस समय जो लिखा जाता है वह यह कि वह बालक होगा या बालिका होगी, उसके आयु एवं कर्म, उसके नेक एवं पापी होने, रोज़ी-रोटी एवं इनके के अतिरिक्त प्रत्येक वो संपूर्ण चीज़ें लिखी जाती हैं जो सांसारिक जीवन में उनके साथ घटित होंगी, फिर उसके अंदर किसी प्रकार की कोई बढ़ोतरी एवं कमी नहीं होती, इसका साक्ष्य अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि अल्लाहु अन्हू की हदीस है, वह कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें बताया जो के स्वयं सत्य हैं एवं उनको सत्यता का प्रमाण मिला हुआ है: "तुम में से प्रत्येक का जन्म उसकी मां के कोख में पूरा हो जाता है, ४० दिनों तक शुक्राणु के स्थिति में होता है, फिर इतने ही दिनों तक जमे हुए रक्त की स्थिति में हो जाता है, फिर इतने ही दिनों तक मांस का एक लोथड़ा बन जाता है, इसके पश्चात अल्लाह तआ़ला एक देवदूत को अवतरित करता है एवं उसे चार बातों का आदेश देता है और उससे कहता है कि उसका कर्म,

उसकी रोज़ी-रोटी एवं उसका आयु लिख दे एवं यह भी लिख दे कि वह नेक होगा या पापी, इसके पश्चात उसने आत्मा फूंक दी जाती है..."।

(बुख़ारी: ३२०८, मुस्लिम: २५४३) ३. वार्षिक भाग्य: यह प्रत्येक वर्ष रमज़ान के अंतिम चरण शुभ रात्रि (शब-ए-क़द्र) में लिखी जाती है, इसमें आगामी एक वर्ष के भाग्य को स्थित किया जाता है, इसका साक्ष्य अल्लाह का यह कथन है:

﴿إنا أنزلناه في ليلة مباركة إنا كنا منذرين * فيها **يفرق كل أمر حكيم** * أمراً من عندنا إنا كنا مرسلين﴾.

अर्थात: नि: संदेह हमने उसे धनी रात्रि (बाबरकत रात) में अवतरित किया, नि: संदेह हम भयभीत करने वाले हैं, इसी रात्रि प्रत्येक कठोर कार्य का निर्णय लिया जाता है, हमारे निकट से आदेश पूर्वक हम ही हैं दूत बनाकर अवतरित करने वाले।

शैख़ अब्दुर्रहमान बिन नासिर सअ़दी रहिमहुल्लाह इस आयत के उल्लेख में लिखते हैं: "अर्थात: प्रत्येक वह चीज़ जिसका संबंध भाग्य से है एवं धर्म से है उनका आदेश अल्लाह के आदेश अनुसार विस्तार पूर्वक स्पष्ट रूप से लिखा जाता है, शुभ रात्रि में लिखा जाने वाला यह स्पष्ट भाग्य उन लेखों में से एक है जिन्हें स्पष्टता के साथ लिखा जाता है, यह लेख थी पूर्व लेख के समान होता है जिसमें अल्लाह ने संपूर्ण सृष्टि का भाग्य, उनका जीवन, उनकी रोज़ी-रोटी, कर्म एवं स्थितियां लिख रखा है।

शैख़ अब्दुर्रहमान बिन नासिर सअ़दी रहिमहुल्लाह का कथन समाप्त हुआ।

●अल्लाह के दासो! आप यह भी ज्ञात रखें -अल्लाह आप पर अपनी कृपा दृष्टि करे- कि भाग में विश्वास रखने का यह अर्थ नहीं कि एक दास अपने कर्म में नि: सहाय है, चाहे उस कर्म का संबंध अच्छे से हो अथवा बुरे से, क्योंकि अल्लाह ने ही दासों को इच्छा शक्ति दी है, सत्य एवं असत्य के बीच अंतर समझने के लिए बुद्धि प्रदान की है जिसके माध्यम से वह छुटकारे के मार्गों को अपनाता है, एवं विनाश होने के मार्गों से वंचित रहता है। अल्लाह ने उसे न्याय करने, पुण्य कर्म करने एवं परिवार वालों के संग सभ्य व्यवहार करने का आदेश दिया है, दुष्ट कर्मों एवं असभ्य गतिविधियों और अत्याचार करने से रोका है इस आधार पर मामले स्वयं दासों की ओर लौटते हैं, चाहे तो वह आभार व्यक्त करे अथवा कुफ़्र करे, चाहे तो सत्य मार्ग पर चले अथवा गुमराही के मार्ग को अपनाए, चाहे तो आज्ञाकार बने अथवा अवज्ञा पर उतर जाए, फिर अल्लाह प्रलय के दिन उसका लेखांकन करेगा जिस कर्म को उसने किया एवं अपनाया, यदि कर्म पुण्य होगा तो बदला भी अच्छा मिलेगा, एवं यदि कर्म दुष्ट होगा तो बदला भी बुरा मिलेगा, अल्लाह ने दासों की इच्छा शक्ति को स्थित करते हुए फ़रमाया:

﴿فَمَن شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ مَآبًا﴾

अर्थात: जो चाहे अपने पालनहार के निकट (पुण्य कर्म कर के) अपना ठिकाना बना ले।

इसके अतिरिक्त अल्लाह का कथन है:

﴿فمن شاء فليؤمن ومن شاء فليكفر﴾

अर्थात: जो चाहे ईमान स्वीकार करे एवं जो चाहे कुफ़्र करे।

अल्लाह का एक और कथन है:

﴿فَأْتُواْ حَرْثَكُمْ أَنَّى شِئْتُمْ﴾.

अर्थात: अपने खेतों में जिस प्रकार चाहो आओ।

●आप यह भी ज्ञात रखें -अल्लाह आप के संग दया पूर्वक व्यवहार करे- कि अल्लाह ने आपको बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य का आदेश दिया है, अल्लाह का कथन है:

(إِنَّ اللهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا)

अर्थात अल्लाह एवं उसके देवदूत उस नबी पर दुरूद भेजते हैं, ए विश्वासियो! तुम (भी) उस नबी पर दुरुद भेजो एवं ख़ूब सलाम (भी) भेजते रहा करो।

●हे अल्लाह! तू अपने दास एवं दूत मुहम्मद पर दया एवं सुरक्षा अवतरित कर, उनके पश्चात आने वाले शासकों (ख़ुलफ़ा) एवं उनके

महान आज्ञाकारियों और प्रलय के दिन तक शुद्‌धता के साथ उनकी आज्ञा करने वालों से प्रसन्न हो जा।

●हे अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमानों को श्रेष्ठता एवं सर्वोच्चता प्रदान कर, बहुदेववाद एवं बहुदेववादियों को अपमानित कर दे, अपने धर्म की रक्षा कर, तू अपने एवं इस्लाम के शत्रुओं को नष्ट कर दे, अद्‌वैतवादियों को सहायता प्रदान कर।

●हे अल्लाह! हमें अपने देशों में अम्न एवं शांति वाला जीवन प्रदान कर, हे अल्लाह! हमारे इमामों एवं शासकों को ठीक कर दे, उन्हें दिशा-निर्देश देने वाला एवं उस पर चलने वाला बना दे।

●हे अल्लाह! मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक लागू करने की शक्ति प्रदान कर, अपने धर्म को सर्वोच्च करने की शक्ति दे एवं उन्हें अपने प्रजाओं हेतु दया एवं कृपा का कारण बना दे।

●हे अल्लाह! हम तुझसे संसार एवं प्रलय की संपूर्ण भलाईयों हेतु प्रार्थना करते हैं जिनसे हम अवगत हैं अथवा अज्ञानी हैं, एवं तेरा शरण चाहते हैं संसार एवं प्रलय के दिन के संपूर्ण बुराइयों से, जिनसे हम अवगत हैं अथवा अज्ञानी हैं।

●हे अल्लाह! हम तेरा शरण चाहते हैं तेरी नेमत के छिन जाने से, तेरे (प्रदान किए गए) स्वास्थ्य के हट जाने से, तेरी अचानक आने वाली यातना से एवं तेरे प्रत्येक प्रकार के क्रोध से।

●हे अल्लाह! हमें क्षमा प्रदान कर, एवं हमारे उन भाइयों को भी जो हम से पूर्व ईमान स्वीकार कर चुके हैं, एवं विश्वासियों की ओर से हमारे हृदय में द्वेष (एवं शत्रुता) मत डाल, हे हमारे पालनहार नि: संदेह तू बड़ा ही दयालु एवं कृपालु है।

●हे हमारे पालनहार हमें सांसारिक जीवन में पुण्य दे एवं प्रलय में भलाई प्रदान कर और नरक की यातना से हमें सुरक्षित रख।

سبحان ربنا رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.

लेखक:

मजिद बिन सुलेमान अलरसी

अनुवाद:

तारिक़ बदर

binhifzurrahman@gmail.com